बदल आते हैं। सभी तो एक जैसे नहीं होते। बादल भी अनेक प्रकार के होते हैं। यहां है ज्ञान और अनुभव की बात। सा. से कोई फायदा नहीं है। भक्तिमार्ग में है नुकसान। ज्ञान माग्र में है फायदा। इसको ही कहा जाता है हार–जीत का खेल। दुनियां कुछ भी नहीं जानती। भारत इतना उंच था फिर इतना कंगाल क्यों हुआ है?यह खेल है। भारत तो स्वर्ग था। स्वर्ग, नर्क के यह दो अक्षर सिर्फ भारत में ही होते हैं। तुम ही स्वर्गवासी फिर नर्कवासी बनते हो। और धर्म वाले स्वर्गवासी नहीं बनते। गाते हैं गॉडफादर पैराडाइज स्थापन करते हैं। भारत ही प्राचीन है तो जरूर भारत ही पैराडाइज होगा ;परंतु यथार्थ कोई की बुद्धि में नहीं है। तुम बच्चों को निश्चय हुआ है कि हम नई दुनियां के मालिक बनते हैं। दुनियां में कोई की भी यथार्थ रीति बुद्धि में नहीं है। कोई भी इन बातों को नहीं जानते हैं। स्वर्ग क्या है यह भी किसी को पता नहीं है। ऐसे ही मुख मीठा कर लेते हैं कि फलाना स्वर्गवासी हुआ। कहने मात्र कह देते हैं। यथार्थ किसी को पता नहीं है। सारी दुनियां में कहने मात्र है। इनसे पेट नहीं भरता। यहां तुम आये हो पेट भरने। पेट खाली हो गया है। फिर बाप आये हैं पेट भरने। हर एक ऐसा ही अपना अनुभव सुनाते हैं। नम्बरवार बच्चे हैं। बाबा हमको पढ़ाते हैं। वो ही बाप,टीचर ,गुरू हैं। कृष्ण बाबा नहीं है। राधा–कृष्ण राजा–रानी तो नहीं हैं। किसी को भी पता नहीं है। द्वापर में कैसे ले आये। वो तो पहले नम्बर का प्रिंस है। यह भी बच्चे जानते हैं कि कृष्ण और राधा अपनी2 राजधानी में थे। दोनों की स्टुडेंट लाइफ। पढ़ते होंगे। कोई की जान–पहचान हो जाती है। फ्रैंडशिप हो जाती है तो एक/दो के घर में जाते हैं। तो इनका भी ऐसा ही था। फिर बाद में स्वयंवर हुआ है। अब तुम रचता बाप को और सारी रचना को जानते हो। अभी तुम कहेंगे ब्रह्मलोक हमारा घर है। हम आत्माएं वहां रहती हैं। स्टार्स का जैसे झाड़ है। नम्बरवार (तो) हैं ना। यहां मनुष्य सृष्टि का झाड़ है। वहां फिर निराकार। तुमको मालूम है कि स्थापना ,पालना, विनाश कैसे होता है। आत्मायें आती–जाती हैं। बाप जब आते हैं तब सब आत्माओं को साथ में ले जाते हैं। प्रलय तो होती नहीं है। गाया जाता है वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी रिपीट। तुम जानते हो कि हम ही 84जन्मों की रिपीटीशन में आते हैं। आगे तो कुछ भी पता नहीं था। अब इनको मालूम है तो तुम बच्चों को भी मालूम है। तुम भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार सृष्टि की आदि,मध्य,अंत को जानते हो। कोई की बुद्धि में धारणा होती है,कोई को भूल जाता है। अनुभव भी यही सुनाता है कि हमने अपनी 84जन्मों की आदि,मध्य,अंत को जाना है। हम आत्मायें मूलवतन में रहने वाली हैं। हम नंगी थीं। तुम आत्मायें मूलवतन में रहने वाली थीं। फिर सतयुग में इतने जन्म लिये। तो मनुष्य समझेंगे कि यह तो अनुभव सुनाता है कि मैंने कैसे 84जन्म लिये हैं। अभी हम तमोप्रधान बन गये हैं। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। आसुरी से दैवी बनाने वाला कोई जरूर है। तुम बच्चे जानते हो कि हम अगर पूरा नहीं पढ़ेंगे तो देरी से आवेंगे। पूरी रीति पढ़ेंगे तो नई दुनियां में जावेंगे। सारा मदार ही पढ़ाई पर है। हम बाबा के बच्चे हैं तो नई दुनियां में क्यों नहीं जावें?दिन प्रतिदिन कला कम होती जाती है। नई चीज को सब पसंद करते हैं। नये स्वर्ग में सुख था। तो अब फिर पुरानी दुनियां को सम्पूर्ण भूलने से नई सम्पूर्ण दुनियां में चले जाते हैं। भगवानोवाच्य है कि तुमको राजाओ का राजा बनाता हूँ। यह पढ़ाई है संगमयुग की। तुम अनुभवी हो। दुनियां तो संगमयुग को नहीं जानती है। यह एक ही संगम है जब बाप आकर सतयुग का लायक बनाते हैं। मूल बात है योग से पावन बनने की। बाप को याद करना कहीं भी बैठे रहो। ऐसे नहीं कि लैटरीन करते समय कैसे याद करें?अरे, बच्चा लैटरीन करते समय बाप को भूल जावेगा क्या?परंतु माया की अपोजिशन है जो कि भुला देती है। योग के प्रोग्राम मिलते हैं। यह अभ्यास पहले बच्चों ने बहुत किया है। भट्ठी में ही थे। और कोई से कनेक्शन नहीं था। खुदाई परिवार था। अच्छा, मात–पिता बापदादा का सिकीलधे बच्चों को यादप्यार और गुडनाइट।